

सामाजिक परिवेश और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध का अध्ययन

गायत्री पांडिया, शोधकर्ता (शिक्षा विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

मानव व्यक्तित्व एवं व्यवहार के विकास में सामाजिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, समुदाय तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ व्यक्ति के भावनात्मक विकास और पारस्परिक संबंधों को प्रभावित करती हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने तथा दूसरों की भावनाओं को समझकर उचित सामाजिक व्यवहार करने की क्षमता से संबंधित है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक परिवेश और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंध का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि सकारात्मक एवं सहयोगात्मक सामाजिक वातावरण व्यक्ति में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सहानुभूति, सामाजिक कौशल तथा प्रभावी संचार जैसी भावनात्मक क्षमताओं के विकास में किस प्रकार सहायक हो सकता है। परिवार में भावनात्मक समर्थन, स्वस्थ संवाद, विद्यालय में सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध तथा साथियों के सहयोग जैसे कारक भावनात्मक विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान कर सकते हैं। इसके विपरीत, तनावपूर्ण सामाजिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक संघर्ष, सामाजिक अलगाव तथा नकारात्मक पारस्परिक अनुभव भावनात्मक समायोजन को प्रभावित कर सकते हैं। अध्ययन के लिए उपयुक्त नमूने का चयन कर मानकीकृत भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी तथा सामाजिक परिवेश से संबंधित प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए जा सकते हैं। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया जा सकता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षा, परामर्श और सामाजिक विकास के क्षेत्र में उपयोगी हो सकते हैं। भावनात्मक रूप से समर्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण व्यक्तियों में बेहतर आत्म-नियंत्रण, सामाजिक समायोजन और सकारात्मक संबंधों को प्रोत्साहित कर सकता है।

मुख्य शब्द: सामाजिक परिवेश, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनात्मक विकास, सामाजिक समायोजन, आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, आत्म-नियमन, सामाजिक कौशल, पारिवारिक वातावरण, व्यक्तित्व विकास